आप भी बखूबी बन सकते हैं गेम चेंजर

मैनेजमेंट फंडा
एन. रघुरामन
raghu@dbcorp.in

महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और पंजाब से जब कम बारिश और फसलें बर्बाद होने के कारण हर रोज किसानों के जान देने की खबरें आ रही थीं, कर्नाटक के हासन जिले के 70 गांवों से एक अच्छी खबर आई। वहां किसानों ने संयुक्त रूप से 2.5 करोड़ रुपए ईंधन उत्पादन कर कमाए। न सिर्फ महाराष्ट्र, पंजाब और उत्तराखंड ने हासन मॉडल को अपने यहां अपनाने की इच्छा जाहिर की बल्कि अफ्रीका के कुछ देशों ने भी इस मॉडल को अपने यहां दोहराने के लिए मदद मांगी है। यहां किसानों को अखाद्य तेल देने वाले बीजों के पेड़ जैसे- होंगे, नीम, जट्रोपा, महुआ, सिमोराउबा, कारंजा आदि लगाने के लिए प्रेरित किया गया। इसके बाद किसान इनके बीजों से तेल बनाने के लिए अपनी उपज सरकारी संस्था को बेच सकतें हैं या छोटी, हाथ से चलने वाली या सिंगल फेज मोटर ऑपरेटेड मशीन से खुद ही तेल बना सकते हैं। निकाले गए तेल को स्थानीय सोप-मेकर्स को या अन्य उद्योगों को बेचा जा सकता है। इसका वे अपने ट्रेक्टर या खेती के अन्य उपकरणों में भी उपयोग कर सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की ऊर्जा की जरूरतों के लिए बायो फ्यूल और खेती में ही इसके उपयोग की रणनीति अपने आप में अनूठी है।

इसका सीधा असर यह हुआ कि आज एक लाख से ज्यादा किसान इस क्षेत्र में प्रशिक्षित हैं। हासन जिले के 2,584 गांवों में से 2,039 में इसमें सहभागिता करने वालों की पहचान की गई है। आयातित फॉसिल फ्यूल पर भारत की निर्भरता और बढ़ती जरूरतों के बीच यह छोटा व अज्ञात-सा जिला अब वैकल्पिक बायो फ्यूल उपलब्ध कराने की उम्मीद के रूप में सामने आया है। फॉसिल फ्यूल के उपयोग के मामले में भारत शीर्ष देशों में पांचवें नंबर पर है। यहां हर साल चार लाख करोड़ रुपए के 4 करोड़ टन डीजल का उपयोग होता है। भारत का नंबर अमेरिका, चीन, रूस और जापान के बाद आता है। शुक्र है उन 1 लाख 15 हजार प्रशिक्षित किसानों का, जिनकी बदौलत भारत अब वैश्विक रूप से ऐसे देश के रूप में पहचान बना रहा है, जो योजनाबद्ध तरीके से बड़े पैमाने पर बायो डीजल उत्पादन और इसके उपयोग की क्षमता हासिल कर रहा है।

2010 में शुरू हुआ प्रोजेक्ट हासन रूरल बायोफ्यूल मॉडल के नाम से जाना जाता है। इसकी शुरुआत बेंगलुरू के कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के वानिकी और पर्यावरण विज्ञान विभाग ने की थी। प्रोजेक्ट कई मायनों में अनूठा है। यह योजनाबद्ध, विस्तृत और अनूठा बायोफ्यूल प्रोजेक्ट है और खेती से जुड़े लोगों को नेशनल बायो फ्यूल मिशन की ओर आकर्षित कर रहा है। इसके योगदान को वर्ल्ड एग्रो फोरेस्ट्री सेंटर ने भी सराहा है। पहले चरण में 70 गांवों के हर घर में बायो फ्यूल सीड पैदा करने वाला एक पेड़ लगाया गया। बायो फ्यूल पार्क ने पहले ऑइल सीड वाले पेड़ों की पहचान की, इसके बाद एक प्रणाली और मानक तय किया गया और ट्रांससेट्रिफिकेशन प्रणाली बनाई गई। इसके बाद उन्होंने खुद तेल निकालने की मशीन, ट्रांससेट्रिफिकेशन यूनिट बनाई। किसानों में हासन बायो फ्यूल मॉडल के प्रति जागरूकता पैदा की और इसके फायदे बताने के अलावा किसानों को प्रशिक्षित भी किया। उन्होंने इसी तरह के पेड़ों की नर्सरियां बनाई, पेड़ लगाने की सामग्री उपलब्ध कराई और चिह्नित स्थानों पर पौधे लगाने की व्यवस्था की। यह काम शुरू होने के बाद से बायो फ्यूल मॉडल किसानों को अतिरिक्त कमाई दिलवा रहा है। हासन और कर्नाटक व देश के अन्य हिस्सों में अधिक से अधिक गैर कृषि योग्य भूमि को बायो फ्यूल प्लांट लगाने के दायरे में लाया जा रहा है। वैज्ञानिक प्रति किलो बायो फ्यूल बीजों से बायो फ्यूल ऑइल अधिक मात्रा में पैदा करने की संभावनाओं को तलाश रहे हैं। हासन मॉडल ने इस दिशा में उन्हें सफलता का पहली बार स्वाद चखाया है।

फंडा यह है कि अगर आप भविष्य पर नजर रखते हैं और उसके बारे में सोचते हैं तो आप हमेशा गेम चेंजर बन सकते हैं। अगर किसान ऐसा कर सकते हैं तो आप भी अपने क्षेत्र में यह कर सकते हैं।